अजायब बानी

मासिक पत्रिका

फरवरी-2022

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां | अंक–दसवां | फरवरी–2022

3
अनमोल वचन
(परम सन्त कृपाल सिंह जी के मुखारविंद से)

17
सतगुरु सबका पालनहारा है
(सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज)

27
काल की रचना
(प्रेमियों के सवालों के जवाब)

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना, डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 239 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

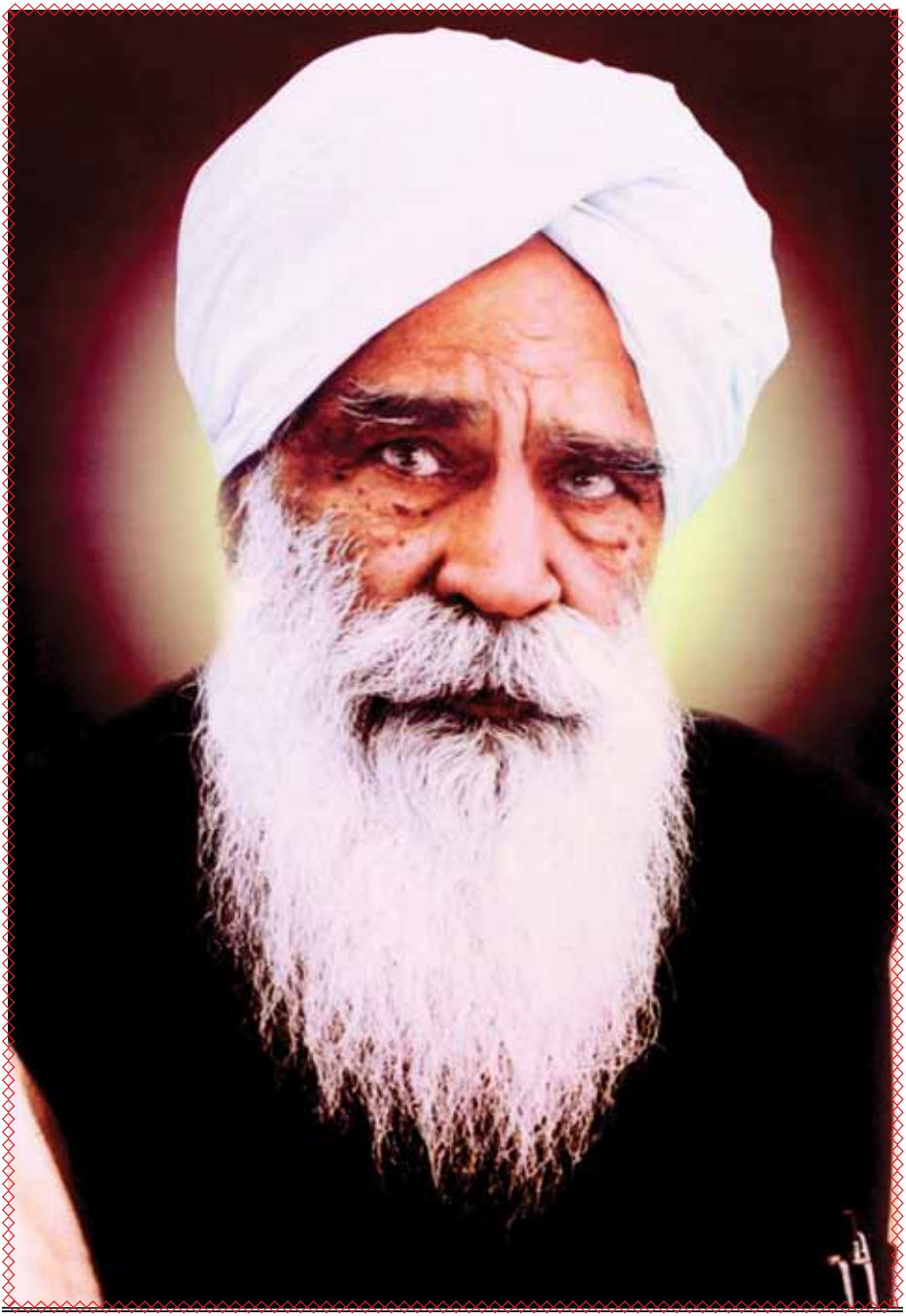

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

अनमोल वचन

शारीरिक रूप से 6 फरवरी मेरा जन्मदिन होता है, इस बारे में मुझे मेरे माता–पिता ने बताया लेकिन असली जन्मदिन वह है जब हम गुरु के घर में जन्म लेते हैं। गुरु के घर जन्म लेकर हमारा जन्म–मरण का चक्कर खत्म हो जाता है। कुरान में आता है कि इंसान हर रोज रात को मरता है और सुबह पैदा होता है, रात का सोना मौत की छोटी बहन है।

मेरा असली जन्म मई 1917 में हुआ उस दिन मैंने शरीर छोड़कर हुजूर के साथ स्वर्ग का सफर किया। अगर आप किसी धार्मिक गुरु का जन्मदिन मनाना चाहते हैं तो उसका यही एक तरीका है कि आपने उससे जो सीखा है उसे ग्रहण करें वही असली उत्सव होगा। जब गुरु संसार में आते हैं तो वे हमें बताते हैं कि परमात्मा को जानें, परमात्मा से मिलाप करें और वापिस अपने असली घर पहुँचें जहाँ से आप आए हैं।

मेरे मन में आप सबके लिए बहुत प्रेम है अगर आपको पता लग जाए कि मैं आपसे कितना प्यार करता हूँ तो आप खुशी से नाचने लगेंगे। बाबा सावन सिंह जी हमें सतसंगी बनाने के लिए आए और उन्होंने हमेशा यही कहा, ''इंसानी शरीर परमात्मा का मंदिर है। हम इस मंदिर में बैठकर बेईमानी की कमाई कर रहे हैं, नशे कर रहे हैं, झूठ बोल रहे हैं, गंदा भोजन कर रहे हैं, माँस, अंडो और नशे का सेवन करके इस मंदिर को प्रदूषित कर रहे हैं।''

हमारा भोजन पवित्र और शाकाहारी होना चाहिए। भोजन को साफ–सुथरी जगह पर पवित्र हृदय से बनाना चाहिए। भारत में अभी भी कुछ

परंपरागत परिवारों में यह चलन है कि खाना बनाने वाली औरत के अलावा कोई भी रसोई में नहीं जा सकता। आजकल ज्यादातर लोग खाना बनाते हुए बेफिजूल की बातें करते हैं, इस तरह का भोजन करने से मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

बाबा सावन सिंह जी इस संसार प्रवास में आए और शारीरिक रूप छोड़ने से पहले उन्होंने हमें आध्यात्मिक प्रकाश दिखाया। ऐसा लगता है वे चले गए हैं लेकिन वे हमेशा हमारे साथ हैं। गुरु पावर कभी नहीं मरती, यह जन्म और मृत्यु का विषय नहीं।

हुजूर सत्य का मानव रूप थे, आप हमें सतसंगी बनाने के लिए आए थे। आत्मा सत्य है, परमात्मा का सार है, परमात्मा अमर है और हमारी आत्मा भी अमर है। हमारी आत्मा मन–इन्द्रियों से लगातार जुड़ाव के कारण कमजोर हो गई है क्योंकि संगत का असर बहुत ज्यादा होता है। आप यही कोशिश किया करते थे कि लोगों से रीति–रिवाज छुड़वाकर उन्हें जीवन का असली मतलब समझाएं।

सन् 1947 बँटवारे के दिनों में भावावेश बहुत ऊँचाई पर था। कुछ मुस्लिम लोग हुजूर के पास रक्षा के लिए आए, हुजूर ने उन्हें बड़े प्यार से डेरे में रखा। सितम्बर में हुजूर ने अमृतसर जाने की योजना बनाई और मुझे डेरे में रहने का आदेश दिया। मुस्लमानों का एक कारवां पाकिस्तान के लिए निकलना था इसलिए हुजूर ने मुझे डेरे के मुस्लमानों को कारवां तक छोड़ने का आदेश दिया। उस दिन बहुत तेज बारिश होने लगी हुजूर को बहुत गहरी यंत्रणा महसूस हुई। आप बोले, ''हमारे मुस्लिम भाई इतनी बुरी दुर्दशा में हैं लेकिन हमारे दिल में उनके लिए कोई रहम नहीं।''

जब हुजूर अमृतसर के लिए निकले तब उन्होंने ब्यास रेलवे स्टेशन के पास मुस्लिम लोगों की बहुत बड़ी भीड़ देखी। हुजूर ने अपनी कार मुस्लिम भीड़ के बीच ले जाकर मुस्लिम कारवां के लीडर को बुलाया और आँखों

में पानी भरकर उससे बोले, ''मेरे पास डेरे में कुछ मुस्लिम भाई हैं, मैं चाहता हूँ कि आप उन्हें सुरक्षित बार्डर पार ले जाए।''

शाम को एक ट्रक भरकर मुस्लमानों को डेरे से निकालना था उसी समय खबर आई कि हथियार लेकर अकालियों का एक गिरोह डेरे के नजदीक मुस्लमानों का जनसंहार करने के लिए इकट्ठा हुआ है। हुजूर की दया और पूरे विश्वास के साथ मैं अकेला ही उन अकालियों के पास गया। कुछ अकालियों ने फावड़ो से मेरा रास्ता रोका। मैंने उनसे कहा, ''ये असहाय भाई हुजूर के पास सहारे के लिए आए हैं, खालसा का फर्ज है कि इन्हें जो रक्षा चाहिए वह दी जाए। अच्छा होगा अगर आप इन्हें छाती से लगा लें।'' मेरे ये शब्द सुनकर दो बूढ़े अकाली आगे आए और बोले, ''आपने आज खालसा को बचा लिया है, हम इनका बाल भी बाँका नहीं होने देंगे।'' उनमें यह परिवर्तन हुजूर की दया से ही आया।

जैसे ही ट्रक अकालियो के पास से गुजरने लगा मैंने ट्रक रोककर उन लोगों से कहा, ''ये हमारे भाई अपना चूल्हा और घर छोड़कर जा रहे हैं, ये केवल जरूरत को ध्यान में रखकर ऐसा करने पर मजबूर हुए हैं। इतने साल हम एक साथ शान्ति और समझौते से रह रहे थे। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि हम इन्हें गले लगाकर अलविदा कहें?'' एक पल में मैंने अकाली और मुस्लमानों को आपस में एक–दूसरे के गले लगते हुए देखा, उनकी आँखों से आँसू निकल रहे थे। कुछ समय पहले ये एक–दूसरे को मारने–काटने को आतुर थे। कोई धर्म इंसान का मजाक उड़ाने की अनुमति नहीं देता। यह सब इसलिए है क्योंकि हमें धर्म के नाम पर अपने स्वार्थ के लिए गलत तरीका सिखाया गया है।

यह शिष्य के वश का नहीं, गुरु का काम है। हुजूर ने कहा, ''मैंने इतना किया है बाकी तुमने करना है।'' मैंने रोकर कहा, ''सतगुरु! मैं यह कैसे कर सकता हूँ?'' आपने कहा, ''मैं तुम्हारे साथ हूँ।'' जब शिष्य

अपनी पहचान को गुरु में मिला देता है तो गुरु उसके साथ हो जाता है फिर गुरु पावर काम करती है। शिष्य का पहला धर्म हैं कि वह अंदर से गुरु का कहना मानकर गुरु जो कहे वह वही करे।

बाबा सावन सिंह जी ने खुले दिल से नाम की दौलत लुटाई। हुजूर ने मुझसे कहा था, ''जब मैं तुम्हारे साथ हूँ तो तुम्हें डरना नहीं चाहिए।'' यह सब आपकी दया ही काम कर रही है इसमें मेरी कोई बड़ाई नहीं।

मैंने आज सुबह के सतसंग में कहा था कि जब परमात्मा इंसान के रूप में आता है तो वह हमें आवाज देता है, ''जागो सूरज डूबने वाला है, अपने असली घर जाने के लिए वापिस आओ।'' जिसने पढ़–लिखकर अपने जीवन में स्नातक की डिग्री हासिल की है वह मरने के बाद भी स्नातक ही रहेगा। अगर आप ईमानदारी से एक कदम आगे बढ़ेंगे तो परमात्मा आपकी मदद करेगा।

पिछली बार जब मैं अमेरिका से चलने लगा तो वहाँ के लोगों ने मुझे एक लाख डॉलर पेश किए लेकिन मैंने डॉलर लेने से मना कर दिया। उन लोगों ने कहा अच्छा होता अगर आप ये डॉलर ले जाते, आप हमारे दिल लेकर जा रहे हैं। इसके परिणाम स्वरूप लोग मेरे पास जंगल में लगी आग की तरह आए।

मैं पिछली बार सन् 1963 में यहाँ आया था। नौं साल से मैं आपसे शारीरिक रूप से दूर हूँ। आपमें से कुछ लोग भारत में मेरे आश्रम आए, मुझे खुशी हुई। भारत आने का मूल उद्देश्य आध्यात्मिक प्रगति को सुधारना था। आप अपने व्यवहार के जरिए मेरे मन में थे। पिता कभी भी अपने बच्चों को नहीं भूल सकता। हम सब परमात्मा के बनाए भाई–बहन हैं।

पिछले साल यहाँ आने का मेरा मन था लेकिन कई कोशिशों के बाद भी नहीं आ सका। मैं पिछले छह महीनों तक भारत के अलग–अलग राज्यों में गया लेकिन मेरा मन यहीं था। आपकी और मेरी तरफ से प्रेम के

धागे बहुत मजबूत हैं। इस बार आने का मन बनाया जबकि राह में बहुत सी रूकावटें थी उसी वजह से आने में देर हो गई। अब मैं दो दिन से यहाँ पर हूँ और आशा करता हूँ आप सब खुश होंगे।

हम सबका एक ही आर्दश है। हममें कोई ऊँचा–नीचा नहीं। हम सबका काम परमात्मा को पाना है। मैं आप सबकी उन्नति की आशा करता हूँ। आपका प्रेम मुझे सब रूकावटों के बाद भी आपके पास खींच लाया। हम कल दोबारा यही मिलेंगे, एक बार मन से मन की बात होगी। हम मिलकर प्रीति भोज करेंगे। जिस तरह धरती खुदाई और जंगल कटाई सहन कर सकता है उसी तरह सन्त ही कठोर शब्द सहन कर सकते हैं। सन्त माफी और पवित्रता से भरे होते हैं, आप जो बीजेंगे वही काटेंगे।

जिसने परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लिया है वह परमात्मा का बच्चा कोई नशीली वस्तु न पीते हुए भी हमेशा नशे में रहता है। उसमें सच्ची संतुष्टि है वह बाहर से सादे कपड़े पहनता है लेकिन अंदर से वह राजाओं का भी राजा है। वह अकेला रहता है लेकिन अकेला नहीं होता, वह हमेशा परमात्मा के ध्यान में रहता है। परमात्मा एक समुंद्र है जिसका कोई आदि–अन्त नहीं।

हमारे ऊपर परमात्मा की दया है। दया तीन तरह की होती है पहली दया–उसने हमें इंसानी शरीर दिया, इंसानी शरीर पाकर हम परमात्मा का आर्शिवाद पा सकते हैं। दूसरी दया–गुरु हमें नाम के साथ जोड़ते है। तीसरी दया–हम नाम जपकर अपनी आत्मा पर दया करते हैं। हम अपने ऊपर दया करेंगे तो हम परमात्मा और गुरु की दया को प्राप्त कर सकेंगे।

गुरु किसी स्कूल या कॉलेज में नहीं पढ़ते। क्या गुरु नानकदेव जी या पैगम्बर मौहम्मद किसी कॉलेज में पढ़े थे? यह अंदर की जागरूकता है, यह अनुमान या भावनाओं का मामला नहीं, यह देखने का मामला है। वे देखते हैं और दूसरों को भी दिखाते हैं।

सतगुरु इंसानी रूप में है, उसमें प्यार का सागर हिलोरे लेता है। हमें सतगुरु से प्रेम करना चाहिए, हमने बाहरी पर्यावरण को हटाकर अंदर की ओर जाना है, असली राह पहले से ही हमारे अंदर है। अनमोल दिव्य खजाना पहले से ही इस नाशवान शरीर में है। यह शरीर भक्ति के खजाने का घर है, अंदर जाओ और खुद देखो कि सारी महिमा और सुंदरता अंदर है। इस इंसानी घर की चाबी गुरु को दी हुई है।

हम पहले ही किसी न किसी तरीके से भक्ति कर रहे हैं। कोई बच्चों की भक्ति कर रहा है, कोई रिश्तेदारों की कोई धन–संपत्ति की भक्ति कर रहा है। गुरु कहते हैं, ''हे परमात्मा, मुझे अपना दास बनाओ।'' लेकिन हम दुनिया की प्रशंसा और मान–सम्मान के दास हैं।

मैं पाकिस्तान गया वहाँ कुछ मुसलमान सूफ़ियों से मिला। उन सूफ़ियों ने मुझे देखकर कहा, ''हम तीन साल से आप जैसे किसी को देख रहे थे और हैरान थे कि वह कौन हो सकता है?'' यह परमात्मा की व्यवस्था थी। जैसा कि मैंने आपसे कहा है कि जहाँ भूख हो वहाँ कुछ न कुछ व्यवस्था हो जाती है इसलिए कहा गया है कि गुरु तब आता है जब शिष्य तैयार होता है।

अगर आप परमात्मा पावर को अपने अंदर प्रकट करना चाहते हैं तो आपको अपनी सोच साफ करनी होगी। जब उसके सिवाय और कोई सोच नहीं होगी तो उसके आने के लिए बहुत जगह होगी। सतसंग का आनन्द लें और उसकी संगत करें जो खुद सत्य का प्रतिबिम्ब बन गया हो। आत्मा का विज्ञान नया नहीं है, यह परमात्मा के पास वापिस जाने का रास्ता है।

आप परमात्मा की याद में बैठें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरे धर्म वाले भी आपके साथ बैठे हैं। अगर आपका ध्यान दूसरे लोगों पर केन्द्रित होता है तो आप उनके रंग में रंग जाएंगे। आपका ध्यान हमेशा उस जीवित शक्ति पर केन्द्रित होना चाहिए।

जैसे नशा करने वाले लोग एक साथ बैठते हैं और वे नशे के बारे में चर्चा करते हैं, वैसे ही परमात्मा को पाने वाले लोग परमात्मा के सिवाय किसी विषय पर बात नहीं करते, इसे ही सतसंग कहते हैं।

अपनी जीविका खुद कमाएं और अपने परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाएं लेकिन कम भाग्य वालों के लिए भी इसमें से थोड़ा सा हिस्सा रखें। हमें एक–दूसरे की सहायता करनी चाहिए।

नियमित सतसंग, ग्रुप मीटिंग चर्चा का विषय नहीं बनने चाहिए। बहस करने की सभा नहीं होनी चाहिए। सतसंग और ग्रुप मीटिंग में केवल अभ्यास और सतसंग ही होना चाहिए।

हम अपने संबंधियों और रिश्तेदारों को श्मशान ले जाते हैं और उन्हें नष्ट होता हुआ देखते हैं। कई बार हम अपने हाथों से भी अग्नि देते हैं फिर भी हम भूल जाते हैं कि एक दिन हमारे साथ भी ऐसा होगा।

मौत के समय डर के दो कारण हैं। एक–यह कि हमें पता नहीं कि शरीर कैसे छोड़ना है? दूसरा–जब हम शरीर छोड़ते हैं तो हमें यह नहीं पता होता कि हम कहाँ जा रहे हैं? इसलिए जीते जी मरना सीखें।

सभी धर्म अच्छे हैं लेकिन अपने धर्म में जीना सबसे अच्छा है। हम दूसरे धर्मों के बारे में नहीं जानते, हमें सिर्फ अपने धर्म का अनुभव होता है इसलिए हम पूरा न्याय नहीं कर पाते। हमें कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए जो ग्रंथो के सच्चे महत्त्व को समझता हो वही हमें सही राह दिखा सकता है।

जीवन के अन्त में आपका ख्याल जिस तरफ होगा वह ख्याल आपको वहीं ले जाएगा, यही कानून है। हर दिन, हर घंटा, हर मिनट, हर सैकिंड आपको अंत के नजदीक ले जा रहा है। हमारा समय बीतता जा रहा है और हमने लक्ष्य को हासिल नहीं किया। परिणाम यह होगा कि हम बाहर से ही बंधे रहेंगे और हम फिर इस संसार में वापिस आ जाएंगे; बंधे रहने का कारण केवल हमारी इच्छाएं हैं।

हमें लगता है कि हम बूढ़े हो रहे हैं लेकिन सच यह है कि हम बच्चे होते जा रहे हैं। अगर एक आदमी ने पचास साल जीना है और वह दस साल जी चुका है तो उसके पास चालीस साल बाकी बचे हैं। जब बीस साल बीत जाते हैं तो उसके पास तीस साल बचे हैं। आप बूढ़े हो रहे हैं या बच्चे? हम नीचे की तरफ जा रहे हैं।

समय बीत रहा है, जैसे पानी से भरा हुआ घड़ा एक–एक बूँद करके रिस रहा है, एक दिन यह घड़ा खाली हो जाएगा। अगर आपमें परमात्मा को जानने की इच्छा है तो आप चिन्ता रहित हो जाएं। गुरु संसार में आकर हमें सिखाते हैं कि अपने ध्यान को बाहर से हटाएं।

आप खुश क्यों नहीं हैं? खुशी का भंडार आपके अंदर है लेकिन आप सारी जिंदगी खुशी को बाहर खाने–पीने, दृश्यों का मजा लेने, संगीत आदि में ढूंढ़ते हैं। जब आप अपने ख्याल को बाहर से हटा लेते हैं और शरीर की चेतना से ऊपर उठ जाते हैं तो आपको आपके अंदर ही खुशी का भंडार मिल जाता है। शेर को जब अपनी प्यास बुझानी होती है तो वह नदी पर जाता है। आप शेर जैसे बनें, आप परमात्मा की अंश आत्मा हैं।

आप अपने आप से सच्चे बनें। आप दूसरों को धोखा दे सकते हैं लेकिन अपने अंदर के परमात्मा को धोखा नहीं दे सकते। अगर आपके अंदर परमात्मा के राज्य का प्रेम होगा तो यह पक्का है कि शरीर छोड़ने के बाद आप परमात्मा के पास जाएंगे। आप परमात्मा की तरफ एक कदम बढ़ांएगे तो परमात्मा आपको ग्रहण करने के लिए सौ कदम बढ़ाएगा।

हम जो भी काम करते हैं, खाते हैं, पीते हैं या जो कुछ भी करते हैं, हमें हर हाल में परमात्मा का शुक्रिया करना चाहिए। नाशुक्रा होना सबसे बड़ा पाप है अगर आप काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को काबू में करना चाहते हैं तो गुरु का साथ लें। जो इन्द्रियों से ऊपर उठना चाहता है वह इस शरीर को मिट्टी के पुतले से ज्यादा कुछ नहीं समझता।

परमात्मा की कलम हमारे वर्तमान और पिछले कर्मों के हिसाब से हमारा भाग्य लिखती है। हमने जो बीज बोया है वैसा ही फल उगेगा। अच्छे कर्म अच्छा फल देंगे और बुरे कर्म बुरा फल देंगे।

मन एक बहुत ही चालाक चोर है, यह दोस्त की तरह दिखाई देता है लेकिन आखिर में यह आपको नीचे की तरफ गिरा देता है। इंसान को तीन चीजें मारती हैं–आलस, निन्दा और जल्दबाजी। दुनिया की इच्छाएं आपको दुनिया में वापिस ले आएंगी और परमात्मा को पाने की इच्छा आपको परमात्मा के पास ले जाएंगी।

नामदान का मतलब संपूर्ण बनने की राह है। केवल नाम मिल जाने से कोई सतसंगी नहीं बन जाता। सत का मतलब सच और संगी का मतलब साथ होता है। अभ्यास में बैठने से पहले आप कोई प्रेम या बिछोड़े का भजन गाएं जिससे ऐसा वातावरण बन जाएगा जो अभ्यास में आपकी मदद करेगा, परमात्मा प्यार का सागर है।

परमात्मा बिल्कुल अकेला है, परमात्मा का कोई माता–पिता, भाई–बहन नहीं और वह चाहता है कि जो भी उसके पास आए वह अकेला ही आए। गुरु जब आपको नामदान देता है तो हमेशा के लिए आपके अंदर बैठ जाता है और गुरु आपको तब तक नहीं छोड़ता जब तक दुनिया का अन्त न हो जाए। कोई भी शक्ति आपको गुरु के हाथों से दूर नहीं कर सकती।

जब परमात्मा देखता है कि आपके अंदर उसे पाने की इच्छा है, आप उसके बिना नहीं जी सकते तो वह कुछ ऐसी व्यवस्था करता है कि आपको किसी ऐसे के संपर्क में ले आता है जहाँ वह प्रकट है। वह आपके पास आता है लेकिन आप उसे नहीं जानते कि वह कौन है? वह हमें मौका देता है। जब हम उसकी बात सुनते हैं तो स्वाभाविक ही हम आकर्षित होकर उस राह पर चलने लगते हैं।

गुरु शरीर नहीं होता, पावर होती है जो शारीरिक रूप में काम करती है। वह कभी मरती नहीं बल्कि नामलेवा के अंदर तब तक बैठी रहती है जब तक आत्मा को सच्चखंड न पहुँचा दे।

आपको कभी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि गुरु आपसे दूर है, गुरु हर पल आपके साथ है। समय–समय पर गुरु आते हैं लेकिन यह जरूरी नहीं कि वे उसी वंश के हों। गुरु पावर सदा रहती है और सारे संसार में काम करती है।

समझदार व्यक्ति गुरु के वचनों को ध्यान से सुनता है, उनके वचन अपने मन में रखता है और गुरु के कहे अनुसार जीता है। ऐसा करने वाला गुरु की खुशी प्राप्त कर लेता है। जब हम गुरु के चरणों में आ जाते हैं तो गुरु हमारी देख–रेख करता है।

सारा समुंद्र पीने के बाद भी आपके होंठ सूखे होने चाहिए। भक्ति में तरक्की होने पर भी आपको वह तरक्की कभी किसी को नहीं दिखानी चाहिए। गुरु की महानता इसी में है कि वह देखे और दूसरों को भी दिखा सके कि वह क्या देखता है? सच्चे शिष्य की नजर आसानी से अपने गुरु की दस्तकारी को पहचान लेती है।

दूसरों की मदद करने की कोशिश करें आपका जन्म केवल आपके अपने लिए नहीं हुआ है। अपनी कमाई गरीब, जरूरतमंद और भूखों को भी बाँटें। हर रोज सुबह–शाम अपना समय अभ्यास में बिताएं।

आपकी किस्मत अच्छी है कि आपको इंसानी जामा मिला है। इस जामें में आप परमात्मा से मिल सकते हैं, इंसानी जामें का उद्देश्य सभी लेन–देन और पिछला उधार चुकाना है।

प्रेम बोझ नहीं, प्रेम सब कुछ सुंदर कर देता है। वह प्रेम नहीं जो शरीर से शुरू होकर शरीर पर ही खत्म हो जाए। प्रेम शरीर से शुरु होकर आत्मा पर खत्म होता है। आँखें आत्मा की खिड़कियाँ हैं, जब आप दूसरों

की आँखों में देखते हैं तो आप दूसरों को प्रभावित करते हैं। दूसरों की आँखों में न देखें चाहे वह औरत हो या मर्द हो। अगर आपका अपने ऊपर नियंत्रण है तो आप दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रेम परमात्मा के पास जाने का रास्ता है, परमात्मा प्रेम है और हमारी आत्मा भी प्रेम हैं। प्रेम के जरिए ही हम परमात्मा को जान सकते हैं। प्रेम सच्चा त्याग, सेवा और समर्पण करना जानता है। प्रेम की चुटकी घर–गृहस्थी में डाल दें, पूरा घर शन्ति से भर जाएगा। थोड़ा सा प्रेम कर्मचारियों के ग्रुप में डाल दें, वे एक–दूसरे से प्रेम करने लग जाएंगे। रीति–रिवाजों के पीछे असली मकसद प्रेम पैदा करना है।

प्रेम केवल देता है, लेता नहीं। प्रेम में जुबान बहुत मीठी हो जाती है। वह दूसरे इंसान के हृदय को पकड़ लेती है। असली प्रेम से भरी झलक पत्थर पर भी असर डाल सकती है। प्रेम वह है जिसमें बिना रूके प्यारे परमात्मा को याद किया जाए। प्रेम में प्रेमी और प्रीतम एक हो जाते हैं। जिसमें प्रेम प्रकट है वह जीवन के अमृत का भरा हुआ प्याला है।

इस राह पर चलने के लिए पवित्र जीवन बहुत जरूरी है अगर किसी घर की नींव मजबूत नहीं तो वह घर कब तक खड़ा रहेगा? सहानुभूति से माफी आती है और लालच से पाप। पवित्रता खुशी का सागर है कोई इसकी गहराई का अंदाजा नहीं लगा सकता। नम्रता सन्तों का श्रृंगार होता है। भाषाएं इंसान ने बनाई हैं, किसी भी भाषा में बात करें जो आपको पसंद हो लेकिन प्रेम से करें।

चमत्कारों के पीछे न भागें, वे आपके पवित्र नाम की राह में बाधा डालेंगे। आप दूसरों को सुधारने की कोशिश न करें, अपने आपको सुधारें। जब आप सुधर जाएंगे तो सारा संसार सुधर जाएगा। अगर कोई आपसे नफरत करता है तो आप उससे प्रेम करें।

सतसंग केवल तभी सतसंग है जब परमात्मा के सिवाय आपके दिमाग में कोई और सोच न हो। आप अपनी जीविका कमाएं और उसमें से कुछ उन्हें दें जो परमात्मा के नाम पर आपसे जुड़े हैं। आप एक इंसान हैं धर्म गुरुओं के आने के बाद ही आप हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई बनें। वेद–ग्रंथ महान गुरुओं के शब्दों से भरे पड़े हैं। आप दुनिया में रहें लेकिन दुनिया में रहते हुए परमात्मा को न भूलें।

परमात्मा ने एक शब्द से सारा संसार बनाया, वह कितनी महान ताकत है और हमारी आत्माएं परमात्मा का सार हैं। हमारे पास बहुत महान शक्ति है लेकिन हमारी आत्मा दुनिया में फँसकर बहुत कमजोर और निर्बल हो चुकी है। भक्ति का सारा खेल ही ध्यान से है। अगर आप अपना सारा ध्यान उस महान परमात्मा पर टिका दें तो आप भक्ति की राह पर अग्रसर हो जाएंगे।

किसी एक कमरे को अभ्यास के लिए अलग से रखें। गुरु के प्रेम के अलावा किसी को भी उस कमरे में न आने दें। वह जगह पवित्र हो जाएगी और जब आप उस कमरे में जाएंगे तो आप उस गूँज को सुनेंगे। एक समय पर एक ही काम करें। उतना ही खाना खाएं जितना आपके शरीर को चाहिए, भूख से एक ग्रास कम ही खाएं।

जब आप उसे याद करेंगे तो वह भी आपको याद करेगा। सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाएं। प्रेम से बड़ी कोई साधना नहीं।

अगर आप परमात्मा की बनाई रचना से प्रेम करना शुरु कर दें तो कुछ ही महीनो बाद आप अपने आपमें बदलाव महसूस करेंगे। जो चीज कुछ समय पहले बुरी लगती थी वह अच्छी लगने लग जाएगी। इन्द्रियों से ऊपर उठकर अंदर जाएं। वही परमात्मा को पाता है जो उसे खोजता है।

सबसे अच्छी बात यह है कि आपको नामदान मिल गया है, आप किसी से ज्यादा बातचीत न करें। अपनी जीविका के लिए कमाई करें और अपने गुरु से बात करें। परमात्मा हमारे नजदीक है, हम कभी परमात्मा के बिना नहीं हैं। आप अपनी तरफ देखने की कोशिश करें, आपके अंदर प्राकृतिक उछाल है। हम दुनियावी चीजों को त्यागकर ही परमात्मा की राह पा सकते हैं।

हम जिसे तीर्थस्थानों पर खोजते हैं वह हर इंसान के अंदर बसता है। इंसानी जामें में पैदा होकर परमात्मा को पा लेना ही लक्ष्य है। हम दूसरों की समीक्षा करते हैं लेकिन हमें अपना जीवन देखना चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं? परमात्मा ने इंसान बनाया और इंसान ने धर्म बनाए हैं। वह शक्ति न हिन्दु है न मुसलमान वह शक्ति परमात्मा है। परमात्मा हमारा दिल देखता है बाहरी रूप नहीं देखता। इंसान आदतों का जंगल है।

मैं चाहता हूँ कि आप लोग परमात्मा के साम्राज्य में जागें। परमात्मा का साम्राज्य आपके अंदर चमक रहा है। किसी का बुरा न सोचें। महानता, दौलत और प्रशंसा के लिए संघर्ष न करें। सत्य, पवित्रता और विनम्रता के लिए संघर्ष करें। सबके लिए मन में प्रेम रखें। ***

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

27 दिसम्बर 1988

सतगुरु सबका पालनहारा है

गुरु नानकदेव जी व गुरु अंगद देव जी की बानी 16 पी.एस.आश्रम (राज.)

सब सन्तों का यही उपदेश है कि परमात्मा ने इस रचना को बनाया है। उसने ये कानून बनाए हैं कि किस तरह दिन–रात, तारा मंडल, सूरज मंडल, चन्द्रमा मंडल अपनी–अपनी जगह पर पैदा किए हैं। इसी तरह परमात्मा ने और भी ग्रह पैदा किए हैं। महात्मा संसार में आकर देखते हैं कि कोई उसे कुदरत कहता है और कोई उसे भगवान कहता हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

कुदरत दिस्से कुदरत सुणिए कुदरत भौ सुख सार

आप परमात्मा को किसी भी नाम से बुला लें आखिर वह परमात्मा एक है। जिस परमात्मा ने यह रचना पैदा की है उसके बनाए हुए पक्के नियम अपने आप ही चल रहे हैं। परमात्मा ने संसार में पशु, पक्षी और हर श्रेणी के इंसान पैदा किए हैं। परमात्मा इन सबको पैदा करके बेफिक्र नहीं, वह सबको अपनी नजरों के नीचे रखता है।

महात्मा हमें यह भी बताते हैं कि अच्छे या बुरे जीव उसने खुद ही बनाए हैं, वह दोनों को ही अपने नियमों के आधीन चला रहा है। हमें किसी में नुक्ताचीनी करने का अधिकार नहीं अगर कोई गलत काम करता है तो उसके बुरे कर्म बन जाते हैं, भगवान उसे उन कर्मों को भोगने के लिए फिर संसार में भेज देता है।

यहाँ तक कि हमारा संगत में आना भी पहले से ही तय होता है। गुरु का मिलना, नाम का मिलना भी पहले से ही तय होता है लेकिन हम लोग जब तक बाहर बैठे हैं हमें समझ न होने की वजह से हम परेशान रहते हैं।

हम मानते हैं कि जिनकी जिम्मेवारी महात्मा ने ले ली है जिन्हें नाम के साथ जोड़ दिया है नाम, देर–सवेर उन्हें जरूर अपने साथ मिलाएगा लेकिन कमाई पर इसलिए जोर दिया जाता है कि आप जीते जी भ्रम और वहम से निकलें; सच्चाई को खुद देखें।

महाराज कृपाल मूसा पैगम्बर की एक कहानी सुनाया करते थे। एक बार मूसा ने खुदा से कहा, ''आप हर एक व्यक्ति को रोजी देते हुए बहुत परेशान होते होगें हर एक की संभाल करनी बहुत मुश्किल होती है। क्यों न मैं आपका हाथ बँटाऊ? आप यह ड्यूटी मुझे दें।'' खुदा ने मूसा से कहा, ''मूसा, यह ड्यूटी निभानी बहुत मुश्किल है।'' खुदा ने मूसा को अपना प्यारा समझकर कहा, ''अच्छा भई, आज तू रोजी दे।''

मूसा ने बहुत से लोगों को रोजी दी लेकिन एक आदमी को रोजी नहीं दी। वह आदमी खुदा में नुख्स निकाल रहा था कि मुझे रोजी नहीं दी खुदा ने यह ठीक नहीं किया। खुदा ने मूसा को बुलाकर पूछा तो मूसा ने कहा, ''यह बहुत बुरा आदमी है इसका तो नाम लेना भी गुनाह है। यह शख्स मरी हुई औरत को कब्र में से निकालकर उसके साथ गुनाह कर रहा था। क्या ऐसा आदमी रोजी का हकदार है?'' खुदा ने कहा, ''हाँ मूसा, यही मुश्किल है अगर यह बुराई करता है तो अपने लिए करता है, रोजी देने वाला तो उसके साथ बुराई नहीं कर रहा।''

परमात्मा एक है वह अच्छे के अंदर भी काम करता है और बुरे के अंदर भी काम करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''आप खुद ही तजुर्बा कर लें, शब्द के साथ जुड़कर अंदर जाकर देख लें फिर आप किसी को मंदा कहें तो हम आपको मान जाएंगे।'' जब हम अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर अंदर चले जाते हैं तो वहाँ कोई भी मंदा दिखाई नहीं देता, वहाँ परमात्मा ही दिखाई देता हैः

जले परमात्मा थले परमात्मा

हर महात्मा ने इस चीज को ध्यान में रखकर कहा है कि आपको हर जगह परमात्मा ही काम करता हुआ नजर आएगा। हजरत ईसा ने कहा था, ''आप अपने विरोधियों के लिए भी प्रार्थना करें।'' कबीर साहब कहते हैंः

अव्वल अल्लाह नूर अपाया, कुदरत के सब बंदे
एक नूर से सब जग उपजया कौन भले को मंदे

जो लोग यह कहते हैं कि हम बहुत अच्छी कमाई वाले हैं दूसरी तरफ लोगों की निन्दा करने में लगे हुए हैं लेकिन सन्त चुप रहते हैं। सन्तों का चुप रहना ही उनका जवाब होता है।

महाराज सावन सिंह जी की बहुत आलोचना की गई, एक फिरके ने तो आपके खिलाफ किताब ही छपवा दी। इसी तरह महाराज कृपाल के खिलाफ व और भी कई सन्तों के खिलाफ बहुत कुछ सुना है। दुनियादार कहाँ तक सन्तों के साथ बुरा सुलूक करते हैं। अफसोस से कहना पड़ता है कि सन्तमत को मानने वाले लोगों ने ही महात्माओं की निन्दा की। जब महाराज सावन सिंह जी से कहा गया कि आप इसका कोई जवाब दें तो आपने कहा, ''सन्तों की चुप ही जवाब होती है।'' अब आप देख सकते हैं कि उनके अंदर कितनी नम्रता और कितना विश्वास होता है।

महाराज कृपाल से भी कहा गया कि आप इस किताब का कोई जवाब दें। आपने हँसकर कहा, ''सब मिलकर बैठें। हम यहाँ प्रभु का भजन करने के लिए आए हैं, प्रभु की याद में बैठें।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''होछा आदमी सदा ही अपनी सफाई पेश करता है लेकिन स्याना आदमी वक्त की इंतजार करता है कि वक्त अपने आप ही बता देगा। बुराई करते वक्त, निन्दा करते वक्त बंदा किसी खास बुरे कर्म, जज्बात के नीचे होता है उसे अपनी होश नहीं होती लेकिन यह उसके अपने बस में नहीं होता।''

मैंने ऐसे भी लोग देखे हैं जिन्होंने महाराज सावन सिंह जी के खिलाफ एक विचारणी सभा बनाई हुई थी। वे लोग सीधी बात को उल्टा करके प्रचार करते थे लेकिन वक्त आने पर उनमें से कई लोग आकर मुझसे नाम ले गए हैं, उनका परिवार भी सतसंगी है। आज उनके पास सिवाय पछतावे के कुछ नहीं। वे खुद ही कहते हैं कि हमने बहुत बुरा कमा लिया है।

आपके आगे गुरु नानकदेव जी महाराज और गुरु अंगददेव जी महाराज का छोटा सा शब्द है। आप कहते हैं कि वह अपने आप ही उठाता है और आप ही जीवों को अपनी नजरों के नीचे रखता है। किसे बुरा कहें सारे ही अच्छे हैं क्योंकि सबका परमात्मा, सबका साहब एक है।

आपि उपाए नानका आपे रखै वेक।।
मंदा किस नो आखीअै जाँ सभना साहिबु एकु।।
सभना साहिबु एकु है वेखै धंधै लाइ।।
किसै थोड़ा किसै अगला खाली कोई नाहि।।

आप कहते हैं, ''जिस तरह पिता अपने बच्चों को कुछ पूँजी देकर व्यापार करने के लिए कहता है। समझदार बच्चे उस पूँजी को बढ़ा लेते हैं वे अपने पिता की खुशी प्राप्त कर लेते हैं। कई ऐसे भी होते हैं जो मूल भी गँवा देते हैं, ऐसे बच्चों को पिता फटकारता है।''

इसी तरह परमात्मा हमें नाम का व्यापार करने के लिए श्वासो रूपी पूँजी देकर संसार में भेजता है। किसी को कम किसी को ज्यादा श्वासों की पूँजी दी है। परमात्मा देखता है कि ये क्या करते हैं? कई तो यहाँ आकर अच्छा व्यापार करते हैं लेकिन पिता की शाबाश वही लेगा जो परमात्मा के कहे मुताबिक अपने जीवन को ढालता है, उसकी भक्ति में टाईम लगाता है।

आवहि न्नगे जाहि न्नगे विचे करहि विथार।।
नानक हुकमु न जाणीअै अगै काई कार।।

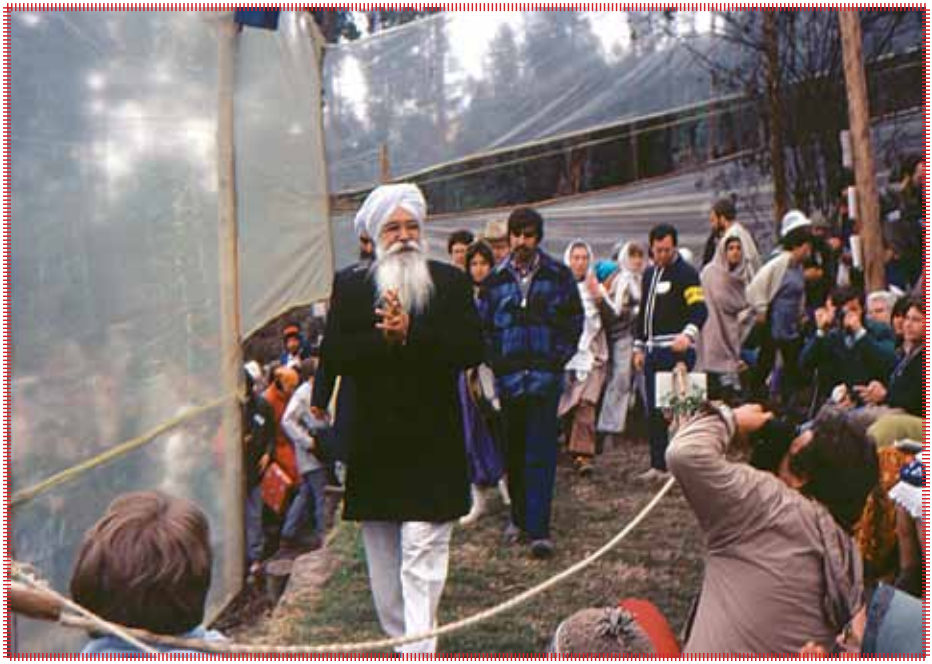

गुरु नानकदेव जी महाराज बड़ी अचरज बात कहते हैं, ''जीव संसार में नंगे आते हैं और नंगे ही जाते हैं। मुट्ठी बंद करके जन्म लेते हैं और हाथ पसारकर चले जाते हैं। हम यहाँ देखते हैं कि कोई कम माया जोड़ता है कोई ज्यादा माया जोड़ता है। सब माया जोड़ने, पदार्थों को इकट्ठा करने में लगे हैं लेकिन खाली हाथ जाते हैं। जब नाम की कमाई नहीं की शब्द के साथ नहीं जुड़े, अपनी आत्मा को मन के पंजे से आजाद करके अंदर परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया तो अब परमात्मा की मर्जी है कि भक्ति न करने से परमात्मा हमें कहाँ जन्म देता है और उस जन्म में हमें कौन–कौन से कष्ट भोगने पड़ते हैं? अब उसकी मर्जी है कि वह हमें चक्की पीसने के लिए देता है या बिमारियों का खोल देता है।''

हम देखते ही हैं कि बड़े–बड़े मुल्कों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और कई डिक्टेटर भी संसार छोड़कर चले जाते हैं। कभी यह नहीं देखा कि

उनके साथ फौजें भी चली जाएं। आश्चर्य की बात तो यह है कि जीव संसार में नंगा आता है और नंगा ही हाथ पसारकर चला जाता है। इतना कुछ देखकर भी हमारे कान पर जूँ नहीं रेंगती। हम कहते हैं कि मौत तो और लोगों के लिए है, हमारे लिए तो दुनिया की ऐशों–इशरतें हैं। शायद वह आलस कर गया होगा कुछ साथ लेकर नहीं गया, हम ले जाएंगे। यह हमारी भूल है। कबीर साहब कहते हैंः

ऐह तन कागज की पुड़िया बूँद पड़त गल जाओगे
कहत कबीर सुनों भई साधो इक नाम बिना पछताओगे

यह तन कागज की पुड़िया की तरह है, कागज के ऊपर पानी पड़ जाए तो वह गल जाता है। यही हालत इस तन की है इस तन को कोई बीमारी खत्म कर देगी, कोई न कोई रोग लग जाएगा आखिर बुढ़ापा आ जाएगा। आपको नाम के बिना पछताना पड़ेगा।

जिनसि थापि जीआँ कउ भेजै जिनसि थापि लै जावै।।
आपे थापि उथापै आपे एते वेस करावै।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा जीवों को श्वासो रूपी पूँजी देकर भेजता है। वह आप ही बुलाता है, ऐसा नहीं कि पैदा कोई और करता है और लेकर कोई और जाता है। परमात्मा ने सब इंतजाम अपने हाथ में रखा हुआ है।''

जेते जीअ फिरहि अउधूती आपे भिखिआ पावै।।

आप कहते हैं, ''आपको आँखों से जो छोटे–बड़े दिखाई दे रहे हैं ये सब भिखारी हैं, परमात्मा सबको कर्मों के मुताबिक भिक्षा देता है लेकिन यह कहना बहुत मुश्किल है क्योंकि हम मन–बुद्धि के फैलाव में हैं। हम कहते हैं कि हम समझदार हैं हमने इस तरीके से कमाई की लेकिन जिंदगी के तजुर्बे बताते हैं कि अच्छे–अच्छे व्यापारियों का भी दिवाला निकल

जाता है। यह सब कुछ परमात्मा के हुक्म में होता है। हम इसलिए उससे दूर है कि अच्छा कर्म किया तो उसका क्रेडिट हम खुद ले लेते हैं अगर कोई बुरा कर्म हुआ, घाटा पड़ गया तो हम परमात्मा में दोष निकालते हैं।''

आजकल सर्जरी में डॉक्टरों ने बहुत कमाल कर दिया है, बनावटी दिल लगा देते हैं और भी बहुत चमत्कार हैं जिन्हे सुनकर बुद्धि चकित रह जाती है कि ऐसा कैसे हुआ! आज साईंस में काफी तरक्की हो चुकी है लोगों की बहुत तीक्ष्ण बुद्धि है लेकिन इतना होने के बावजूद परमात्मा जिसे ले जाना चाहता है वहाँ सारे यत्न फेल हो जाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

वैद्य कहे हों ही भला दारू मेरे वस
ऐह ते वस्तु गोपाल की जब भावे ले खस

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैंः

औखद आए रास जे विच आप खलोया

दवाई वहाँ काम करती है, डाक्टर के हाथ वहाँ काम करते हैं जहाँ परमात्मा आकर खड़ा हो जाता है कि मैंने इस जीव को अभी श्वासो रूपी पूँजी देनी है और इस डॉक्टर को भी यश दिलवाना है।

लेखै बोलणु लेखै चलणु काइतु कीचहि दावे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''भ्रावो, आप जो भी कदम उठाते हैं ये सब गिनती में हैं, जो चलते–फिरते हैं वह भी लेखे में है। हम जो बोलते हैं उसे परमात्मा सुनता है, अपने रजिस्ट्रर में लिखता है। आप यह न सोचें कि हमें कोई देख नहीं रहा। परमात्मा आपको हर जगह देख रहा है, देखने वाला बाहर नहीं आपके अंदर है।''

आप जानते हैं कि आज के जमाने में इंसान बहुत सी ताकतें अपने हाथ में लेकर बैठा है। हमने परमाणु तैयार कर लिए हैं हम जब चाहें जिसे खत्म कर सकते हैं। हम देखते हैं कि वहाँ कुदरत का कहर बहुत जबरदस्त

भूकम्प आ जाते हैं। हम किस बात के दावे करते हैं? वे सब बनाकर छोड़ जाते हैं और दूसरे लोग वहाँ आकर मैं–मैं करने लग जाते हैं।

मूलु मति परवाणा ऐहो नानकु आखि सुणाए।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हमारा समझाने का मूल उद्देश्य यही है कि आज तक जितने भी महात्मा हुए हैं सबका यही उपदेश है कि आप शब्द–नाम की कमाई करें। आपको परमात्मा ने जो श्वासो रूपी पूँजी दी है उसे प्रभु के लेखे में लगाएं। नम्रता महात्माओं का श्रृंगार होता है महात्मा संसार में नमूना बनकर आते हैं। महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि परमात्मा आपको, आपके कर्मों के मुताबिक कोई शक्ति देता है तो आप उस देने वाले का धन्यवाद करें। अगर कोई आपको विद्या और हुनर देता है तो देने वाले का धन्यवाद करें न कि उसे भूल जाएं।

करणी उपर होइ तपावसु जे को कहै कहाए।।

गुरु नानकदेव जी महाराज हमें चेतावनी देते हैं, ''आप जैसी करनी करके अंदर जाएंगे वही आपको दिखाया जाएगा, अच्छी तरह समझाया जाएगा कि दुनिया में आपने क्या–क्या किया है? वहाँ जीव अपनी आँखों से देख लेता है फिर मुकर नहीं सकता। आप बातों से भक्त नहीं बन सकते, कमाई करके ही कोई सन्त या तपा बन सकता है। परमात्मा को पाखंड नहीं भक्ति प्यारी है, सच्चाई प्यारी है।'' कबीर साहब कहते हैंः

पाखंडिया नर भोगे चौरासी खोज करो मन माही रे

गुरु नानकदेव जी किसी की निन्दा या आलोचना नहीं कर रहे, सच्चाई बयान कर रहे हैं कि प्रभु को भक्ति प्यारी है आप वही करें। बातों से हम दुनिया को धोखा दे सकते हैं अपने आप को भी दे लेते हैं। हम सोचते हैं कि हमें कौन देख रहा है लेकिन जो हमारे अंदर बैठा है वह

हमारी हर हरकत को देख रहा है। आपने यही समझाने की कोशिश की है कि आपका उठना–बैठना, चलना–फिरना, खाना–पीना सब लेखे में है।

गुरमुखि चलतु रचाइिओनु गुण परगटी आइिआ।।

आप कहते हैं, ''सन्त–महात्मा गुरुमुख जो परमात्मा के बच्चे बन गए हैं उन्हें नजर आता है कि दुनिया क्या कर रही है। वे दुनिया को तमाशा कहकर बयान करते हैं कि किस तरह जीव परमात्मा के हुक्म में दौड़े फिरते हैं, अपने–अपने धंधे में लगे हुए हैं।''

गुरबाणी सद उचरै हरि मंनि वसाइिआ।।

आप कहते हैं, ''जो उठते–बैठते 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं उनके मन में परमात्मा बस जाता है।''

सकति गई भ्रमु कटिआ सिव जोति जगाइिआ।।

आप कहते हैं, ''शक्ति माया का भ्रम अंदर से निकल गया, उस परमात्मा की ज्योत प्रकट हो गई।''

जिन कै पोतै पुन्नु है गुरु पुरखु मिलाइिआ।।

अब आप अपना तजुर्बा बयान करते हैं, ''जिनके पीछे बहुत सारे पुण्य कर्म, श्रेष्ठ कर्म जमा हो जाते हैं, गुरु उन्हीं लोगों को परमात्मा से मिलवाता है, उन्हें उसकी जानकारी देता है। वही लोग गुरुमुखों से नामदान प्राप्त कर सकते हैं।''

नानक सहजे मिलि रहे हरि नामि समाइिआ।।

इस शब्द में गुरु साहब ने 'शब्द–नाम' की महिमा गाई है। आप कहते हैं कि हम अपने गुरु की दया से उस परमात्मा से मिल गए हैं। जिनके खाते में पुण्य होते हैं उन्हें ही गुरु पुरख मिलता है, उनके अंदर नाम लेने की और नाम की कमाई करने की इच्छा पैदा होती है। ***

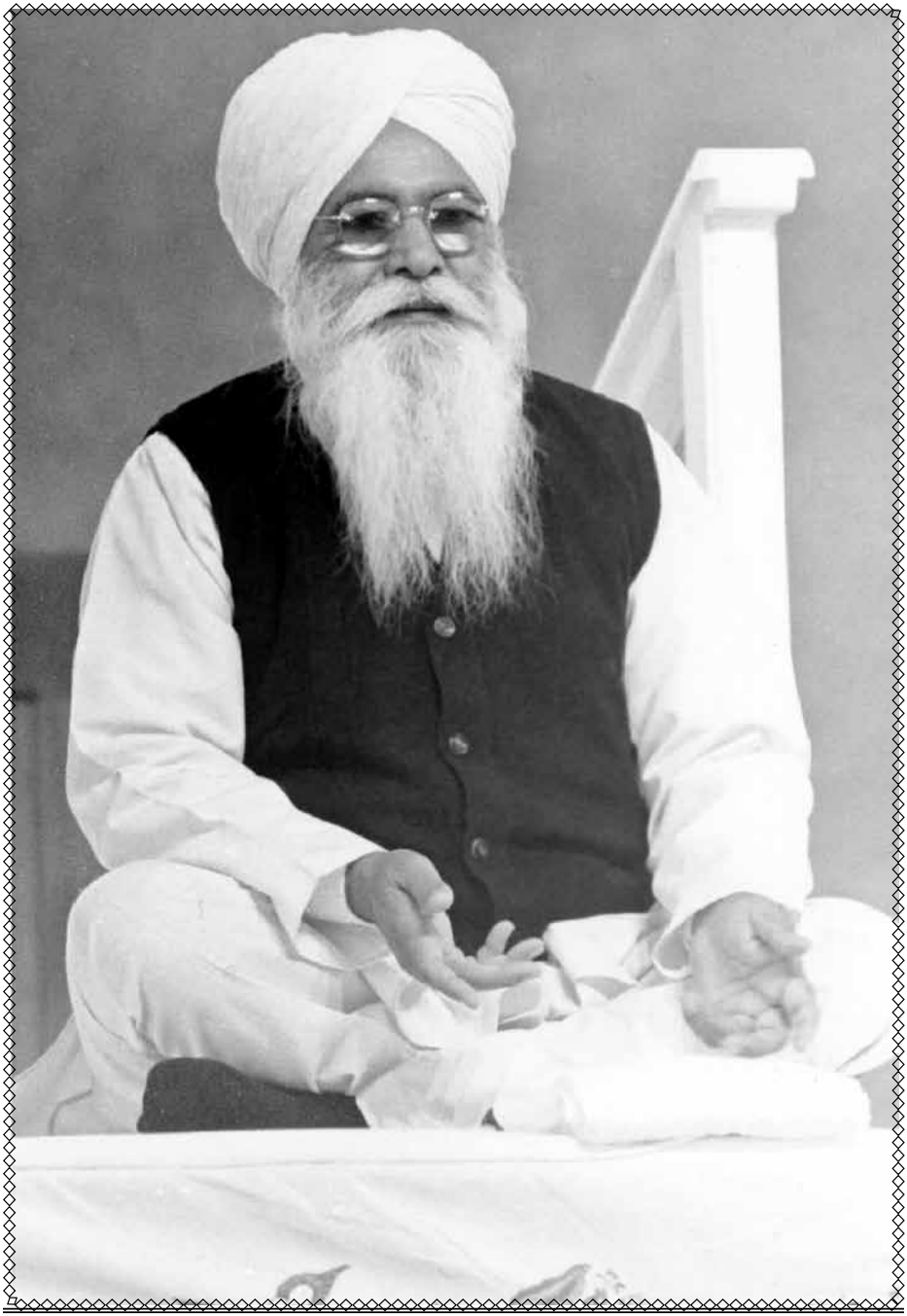

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

28 दिसम्बर 1988

काल की रचना

16 पी.एस.आश्रम (राज.)

एक प्रेमीः महाराज जी, हो सकता है कि आपने इस सवाल का जवाब पहले भी दिया होगा। मुझे काल के प्रति बहुत क्रोध आता है, काल बहुत ऊँची चीज होकर भी हम जीवों को अपने जाल में फँसाकर बहुत दुःख और तकलीफें देता है। यहाँ आने से पहले मैंने रसल पर्किन्स की एक टेप सुनी जिसमें रसल ने एक किताब का जिक्र किया है कि सर्वशक्तिमान भगवान ने हम आत्माओं को काल के हवाले किया हुआ है।

मेरा सवाल यह है कि जब भगवान ने हम आत्माओं को काल के हवाले किया है और अब जब हम अपने घर वापिस जाने की कोशिश कर रहे हैं तो काल हमें पहले से ज्यादा दुःख-तकलीफें क्यों दे रहा है?

बाबा जीः हाँ भई, इस बारे में कल सतसंग में बहुत कुछ बताया था। हमारा हर काम चलना-फिरना, उठना-बैठना, बोलना, सोना और जो भी कर्म करते हैं वह सब कुछ लेखे में है, हमें कोई देख रहा है। सब प्रेमियों को 'अनुराग सागर' पढ़ना चाहिए। अनुराग सागर में कबीर साहब ने काल के बारे में बहुत कुछ खोलकर बताया है कि सतपुरुष ने **काल की रचना** क्यों की, सतपुरुष ने आत्माएं काल को क्यों सौंपी? काल किसी को कष्ट नहीं देता, काल हमारे कर्मों का भुगतान करवाता है।

इस बारे में मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ जिससे समझना आसान हो जाएगा। एक पढ़ी-लिखी पंडिताईन का जवान बेटा गुजर गया। पंडिताईन बहुत रोई-चिल्लाई और भगवान को भला-बुरा कहने लगी। आमतौर पर हम लोग भगवान में ही नुख्स निकालते हैं। भगवान ने आकर उससे पूछा, ''तू मुझे गालियाँ क्यों निकाल रही है? मैं तो किसी को नहीं मारता।''

पंडिताईन ने भगवान से कहा, ''अगर मेरे बेटे को तूने नहीं मारा तो किसने मारा है?'' भगवान ने कहा, ''तेरे बेटे को काल ने मारा है।'' पंडिताईन ने काल को गालियाँ निकालनी शुरु की, काल ने आकर उससे कहा, ''तू मुझे गालियाँ क्यों निकाल रही है? मैंने तेरे बेटे को नहीं मारा, तेरा बेटा सर्प के डसने से मरा है।''

पंडिताईन ने सर्प देवता को गालियाँ निकालनी शुरु की और कहा कि तेरा बुरा हाल हो। सर्प ने सामने आकर कहा, ''तू मुझे क्यों दोष दे रही है? मैं तेरे बेटे के पैदा होने से पहले यहाँ रह रहा हूँ। मुझे समय (भावी) का जो हुक्म था मैंने वह किया है। चाँद–सूरज का काम ऋतुएं बदलना और महीनों का ज्ञान करवाना है, जब किसी का समय निश्चित होता है तो मौत आ जाती है।''

पंडिताईन ने चाँद और सूरज को बुरा–भला कहा तो वे भी आ गए। चाँद और सूरज ने कहा, ''माता, इसमें हमारा कोई दोष नहीं यह तो कर्म देवता का काम है। जो जैसा कर्म करता है कर्म देवता उसकी किस्मत में वैसा ही लिख देता है।'' पंडिताईन ने कर्म देवता को भी कोसा और बुरा–भला कहा।

कर्म देवता ने आकर कहा, ''ठंडे दिल से सोच कि कर्म कौन करता है? मैं तो कर्म भुगतवाने वाला हूँ। जिसका जैसा कर्म होता है, मैं उससे वैसा ही भुगतान करवा लेता हूँ।'' पंडिताईन ने कहा, ''ठीक है, मेरा बेटा अच्छा पढ़ा–लिखा था, उसने ही कोई बुरा कर्म किया होगा कि वह सर्प के डसने से जवानी में मर गया।''

प्यारेयो, काल पर क्रोध करना हमारी गलती है। काल किसी को सुख–दुःख नहीं देता, काल की किसी के साथ दुश्मनी नहीं। काल ने आगे अपने देवता बनाए हुए हैं, देवता किसी को सुख–दुःख नहीं देते। जो जैसा कर्म करता है ये देवता उसी तरह उसके मस्तक पर लेख लिख देते

हैं। समय आने पर हमारे साथ घटना घट जाती है। हम अपनी कमी नहीं देखते कि हमने क्या कर्म किए हैं लेकिन परमात्मा को दोष देते हैं।

महाराज कृपाल ऐसे लोगों के बारे में कहा करते थे कि ऐसे लोग परमात्मा को पत्थर मारते हैं। आपको नामदान के समय बताया जाता है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं, शरीर हमें कर्मों का भुगतान करने के लिए मिला है। हर व्यक्ति कर्म करने के लिए स्वतंत्र है चाहे अच्छे कर्म करे चाहे बुरे कर्म करे, उन कर्मों का भुगतान उस व्यक्ति ने खुद ही करना है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

कीता पाईऐ आपणा ते घाल बुरे क्यों घालिए

तुलसी साहब कहते हैं, ''अगर आप 'शब्द–नाम' की कमाई करें तो आपकी परमात्मा के साथ अनेकों जन्मों की बिगड़ी बन सकती है। हमें परमात्मा के बनाए हुए नियमों में नुख्स निकालने का कोई हक नहीं, हम उनमें कोई तब्दीली भी नहीं कर सकते।''

बहुत से लोग गुरु नानकदेव जी के पास बहस करने के लिए आए और उन्होंने आपसे पूछा, ''यह सृष्टि कब और कैसे रची गई?'' गुरु नानकदेव जी ने उन्हें समझाकर कहाः

तिथि वार न योगी जाणें ऋत वहाँ न कोई
जां कर्ता सृष्टि को साजे आपे जाणें सोई

पुराणों में नहीं लिखा कि धरती कब बनी अगर लिखा होता तो पंडित जानते होते और वे पुराणों में तारीख लिख जाते। योगियों को पता होता तो वे तिथि और वार लिख जाते कि यह सृष्टि किसने, कब और क्यों रची? अच्छा तो यह है कि हम परमात्मा के पास चलकर उससे सवाल करें कि तूने इस तरह के नियम क्यों बनाए हैं?

कुछ अंतरमुखी आत्माओं ने स्वामी जी महाराज से काल के मुत्तलिक यही सवाल किए कि अब आप हमें लेने के लिए आए हैं, आगे हम आप

पर कैसे भरोसा करें, कहीं आप फिर हमें काल के हाथों में न सौंप दें? आपने काल की रचना ही क्यों की है? स्वामी जी महाराज उन आत्माओं को जवाब देते हैं कि काल की रचना जानबूझकर की गई है क्योंकि खौफ के बिना जीव वश में नहीं रहते थे। जो भी आत्मा मेरे देश पहुँच जाएगी, मेरा संदेश सुन लेगी, मैं उसे दोबारा काल को नहीं सौंपूंगा।

अगर हमने इस सवाल को हल करना है तो हमें अंदर 'शब्द' के साथ जुड़ना पड़ेगा, हमें अनुराग सागर पढ़कर तसल्ली कर लेनी चाहिए। काल और दयाल के भेद के बारे में स्वामी जी महाराज की बानी में बहुत कुछ लिखा हुआ है कि काल क्यों रचा गया? सच्चाई तो यह है कि सन्त इस मसले को हल करवाने के लिए ही संसार में आते हैं। सन्त कहते हैं, ''आप आज का काम कल पर न छोड़ें, 'शब्द–नाम' की कमाई करें।''

कबीर साहब कहते हैं, ''शुरु–शुरु में जब कुछ आत्माएं इस संसार में भेजी गई, तब इन पर कर्मों का बोझ नहीं था इसलिए ये आत्माएं जल्दी भंडार में वापिस हो गई। फिर काल ने तन की रचना की और साथ ही मन भी लगा दिया, कर्म की क्रिया चला दी; जैसी करनी वैसी भरनी।''

प्यारेयो, आत्मा चौरासी लाख योनियों में चक्कर काटकर दुःखी हो चुकी हैं, हर जामें के दुःखों को बयान नहीं किया जा सकता। जब हम इंसान के जामें में आकर सुखी नहीं तो किस जामें की आशा लगाए बैठे हैं। अंदर पहुँचा महात्मा हमें नाम का भेद देकर परमात्मा के दरबार में पहुँचा देता है। वहाँ पहुँचकर पता लगता है कि हमने इस संसार में कितने दुःख पाए फिर हम इस संसार की तरफ नहीं झाँकते।

जब सूफी सन्त बुल्लेशाह अंदर गए तो वहाँ पहुँची हुई आत्माओं ने आपका स्वागत किया, आपसे प्यार किया। वह देश शन्ति और प्यार का है। बुल्लेशाह अपने कलाम में लिखते हैंः

बुल्ला रंगमहल्ली जा चढ़या लोक पुछण आए खैर
ऐह कुछ ओत्थों खट्टया मुँह काला नीले पैर

वहाँ पहुँची हुई आत्माएं बुल्लेशाह से पूछती हैं, ''तू यहाँ आ गया है, यहाँ तेरा स्वागत है, तू उस दुनिया से क्या कमाकर लाया है?'' बुल्लेशाह ने कहा, ''कुछ कमाकर नहीं लाया मुँह काला और पैर नीले हैं।''

प्यारेयो, अगर हम उस ताकत पर क्रोध करते हैं तो हम एक और कर्म बना लेते हैं। हमें क्रोध नहीं करना चाहिए, कर्मों के चक्कर से निकलकर 'शब्द–नाम' की कमाई करनी चाहिए। अपराध करने वालों को ही आपत्ति होती है कि पुलिस क्यों बनाई गई, जेल क्यों बनाई गई, कानून क्यों बनाए गए? शान्ति का जीवन व्यतीत करने वाले कानून का पालन करते हैं। उन्हें सरकारी कानूनों पर आपत्ति नहीं, वे सरकार को भला–बुरा नहीं कहते।

कुछ समय पहले चंडीगढ़ से एक पढ़ा–लिखा परिवार आया। सभी भाई–बहन एम.ए.पास थे। उन्हें सतसंग अच्छा लगा, उस परिवार के लोगों ने कहा कि हम रात को सोते समय परमात्मा को बहुत गालियाँ देते हुए कहते हैं, ''तूने हमें इतनी विद्या क्यों दी, हम दुःखी क्यों है?''

मैंने उनसे कहा, ''आप जिस परमात्मा को गालियाँ देते हैं क्या परमात्मा आपको दिखाई देता है, क्या आपने उसे दुःख देते हुए देखा है? आप लोग नाम लें कमाई करें, बाकी बातें बाद में करेंगे।'' उस परिवार के लोगों ने नाम लिया, वे सतसंग में आने लगे, थोड़ी बहुत नाम की कमाई करने लगे तो उन्हें समझ आई और वे बुरे कर्मों से बच गए।

मैं आशा करता हूँ कि आप लोग ठंडे मन से अनुराग सागर और सन्तबानी मैगजीन अवश्य पढ़ेंगे। हो सकता है आपके बहुत से सवालों के जवाब इनमें से मिल जाएं। महात्मा सतसंग में अपना तजुर्बा बयान करते हैं, हमें उनके तजुर्बे से फायदा उठाना चाहिए।

***

आया सतगुरु आया नीं

आया सतगुरु आया नीं, सोहणा कृपाल रंगीला,
मेरे ओह दिल दा जानी, माही मेरा आ गया x 2

1 दिल मेरे विच तांघ ओसदी, वांग पपीहे बोलां
राह तक–तक के थक गई अड़ियो, दिन राती मैं टोलां x 2
आया फेरा पाया नीं, मेरा ओह कंत रंगीला
मेरे ओह दिल.....

2 ओहदी झलक निराली अड़ियो, सूरज तों भी न्यारी,
सतनाम दा जाप कराके, तपदी दुनिया ठारी x 2
आया भेद बताया नीं, दुःखियां दा बणे वसीला
मेरे ओह दिल.....

3 गुलाब देवी माता दा जाया, है संगत दा वाली,
पिता हुक्म सिंह नूं देओ वधाईयां, आई जोत निराली x 2
आया जग विच आया नीं, भगती भंडार जोशीला,
मेरे ओह दिल.....

4 सावन शाह दा बेटा नीं अड़ियो, नाम ओहदा कृपाल,
मैं परदेसण जिंद 'अजायब' ते होया आण दयाल x 2
आया घर विच आया नीं, सोहणा ओह है अणखीला,
मेरे ओह दिल.....

RNI No - RAJHIN/2003/9899

किसी एक कमरे को अभ्यास के लिए अलग से रखें। गुरु के प्रेम के अलावा किसी को भी उस कमरे में न आने दें। वह जगह पवित्र हो जाएगी और जब आप उस कमरे में जाएंगे तो आप उस गूँज को सुनेंगे। एक समय पर एक ही काम करें। उतना ही खाना खाएं जितना आपके शरीर को चाहिए, भूख से एक ग्रास कम ही खाएं।

– परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज